DSSSB TGT & PGT (संस्कृत)

Demo-1

संज्ञा प्रकरण

माहेश्वर सूत्र :- ① अइउण् — इत् संज्ञक वर्ण

② ऋऌक्

③ एओङ्

④ ऐऔच्

⑤ हयवरट्

⑥ लण्

⑦ ञमङणनम्

⑧ झभञ्

⑨ घढधष्

⑩ जबगडदश्

⑪ खफछठथचटतव्

⑫ कपय्

⑬ शषसर्

⑭ हल्

- अच् (स्वर) — अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ।
  संख्या — 9
- यण् — य्, व्, र्, ल्

① झम् (5) ① हल् (व्यंजन)
① झष् (4)
① जश् (3)
① खर् (2,1)
① शल्

① हलन्त्यम् :- उपदेश अवस्था में अन्तिम हल् की इत् संज्ञा होती है।

पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि
त्रिमुनि

① तस्य लोपः :- इत् संज्ञक वर्ण का लोप होता है।

① अदर्शनं लोपः :- विद्यमान होते हुए भी दिखाई न पड़ना लोप है।

① आदिरन्त्येन सहेता :- आदि वर्ण के साथ अंतिम इत् संज्ञक वर्ण को मिलाकर प्रत्याहार बनते है।
(प्रत्याहार संज्ञा)

उदाहरण — अइउण् के अ से लेकर ऐऔच् के च् को मिलाकर अच् प्रत्याहार बनता है। यह अच् प्रत्याहार अ से लेकर च् तक मध्य में आने वाले सभी वर्णों का बोध कराता है।

इक् — इ, उ, ऋ, ऌ
शल् — श, ष, स, ह

झष् - झ, भ, घ, ढ, ध

जश् - ज, ब, ग, ड, द

ञम् - ञ, म, ङ, ण, न

◉ **ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः** — ह्रस्व उ के उच्चारण में लगने वाला समय एक मात्रा का होता है। एक मात्रा का समय जिन स्वरों के उच्चारण में लगता है, उसको ह्रस्व स्वर कहते हैं।

दीर्घ (ऊ) - दो मात्रा का समय जिन स्वरों के उच्चारण में लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।

प्लुत (उ३) - तीन मात्रा का समय जिन स्वरों में लगता है, उसको प्लुत स्वर कहते हैं।

◉ **उच्चैरुदात्तः** — ताल्वादि उच्चारण स्थानों के ऊपरी भाग से उच्चारित होने वाले स्वरों की उदात्त संज्ञा होती है।

◉ **नीचैरनुदात्तः** — ताल्वादि उच्चारण स्थानों के निचले भाग से उच्चारित होने वाले स्वरों की अनुदात्त संज्ञा है।

◉ **समाहारः स्वरितः** — उदात्त और अनुदात्त के समाहार की स्वरित संज्ञा होती है।

◉ **मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः** — मुख और नासिका दोनों से जिस स्वर उच्चारण किया

जाता है उसकी अनुनासिक संज्ञा होता है।

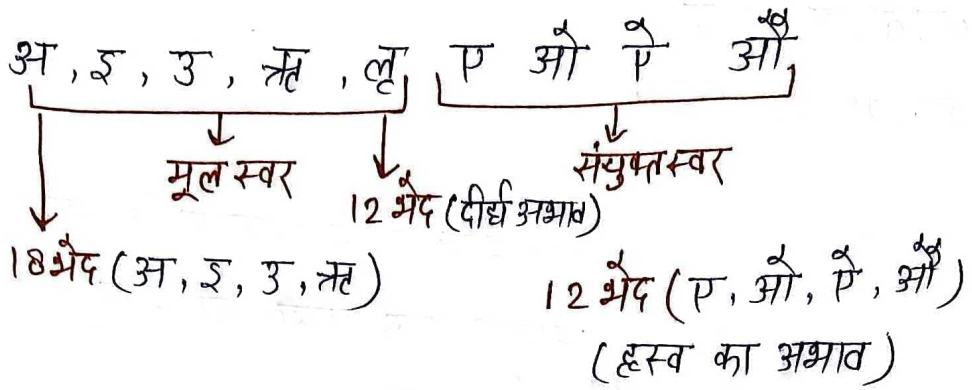

① तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् :-
(सवर्ण संज्ञा)

उच्चारण स्थान

① अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः - अ, क वर्ग, ह, विसर्ग
② इचुयशानां तालु - इ, च, वर्ग, य, श
③ ऋटुरषाणां मूर्धा - ऋ, ट वर्ग, र, ष
④ ऌतुलसानां दन्ताः - ऌ, त वर्ग, ल, स
⑤ उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ - उ, प वर्ग, उपध्मानीय (ऽप, ऽफ)
⑥ जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् - ऽक, ऽख
⑦ नासिकाऽनुस्वारस्य - अनुस्वार
⑧ एदैतोः कण्ठतालुः - ए, ऐ
⑨ ओदौतोः कण्ठौष्ठम् - ओ, औ
⑩ वकारस्य दन्तौष्ठम् - व
⑪ ञमङणनानां नासिका - ञ, म, ङ, ण, न